Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 7, July - 2023 Publication Date: 10/07/2023

DOIs:10.2018/SS/202307002 --:-- Research Paper / Article / Review

गैर तकनीकी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के शिक्षकों में कार्यसंतोष एवं प्रतिबल का अध्ययन

[1] अनामिका सिंह, [2] प्रो. राजकुमारी सिंह
[1] शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, भारत
[2]. डीन एवं डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, भारत
Email - [1]vijaybahadur690@gmail.com, [2]drrksingh@gmail.com

सारांश : मनुष्य और पशु में जितने प्रकार के अंतर पाये जाते हैं इनमें विद्या सर्वोपरि है। विद्या, व्यक्ति को न केवल ज्ञानवान बनाती है बल्कि वह उसे शीलवान और गुणवान भी बनाती है। इसीलिये तो अशिक्षित व्यक्ति न केवल पशु के समान है बल्कि वह पृथ्वी पर केवल बोझ है। शिक्षा ही व्यक्ति और समाज की उन्नति एवं राष्ट्र के विकास की एक मजबूत कड़ी है और मानवीय उपलब्धियों का मूल स्रोत है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में क्षेत्री प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग 120 पुरूष एवं महिला शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित करते हुए किया गया है।

मुख्य शब्द: गैरतकनीकी, शिक्षण संस्थान, महिला एवं पुरूष शिक्षक, कार्यसंतोष, प्रतिबल।

1. प्रस्तावनाः

मनुष्य और पशु में जितने प्रकार के अंतर पाये जाते हैं इनमें विद्या सर्वोपरि है। विद्या, व्यक्ति को न केवल ज्ञान वान बनाती है बल्कि वह उसे शीलवान और गुणवान भी बनाती है। इसीलिये तो अशिक्षित व्यक्ति न केवल पशु के समान है बल्कि वह पृथ्वी पर केवल बोझ है। शिक्षा ही व्यक्ति और समाज की उन्नति का आधार है। राष्ट्र के विकास की एक मजबूत कड़ी है और मानवीय उपलब्धियों का मूल स्रोत है। इसीलिये अरस्तू ने कहा 'शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास करती है।' अरविन्द ने कहा 'शिक्षा मानव मस्तिष्क में आत्मा की शक्तियों का नियोजक साधन है।' और टैगोर ने कहा 'शिक्षा जीवन के अस्तित्व के साथ सामन्जस्य स्थापित करने का साधन है।'

सामान्य रूप से यह माना जाता है कि हमारी शिक्षा तीन वर्ष की आयु से शुरू होती है और पारम्परिक शिक्षा तो 20-22 वर्ष की आयु तक तथा तकनीकी शिक्षा 28-30 वर्ष की आयु तक चलती है। किन्तु अभिमन्यु के उदाहरण से यह सिद्ध हो गया कि शिक्षा तो जन्म के पहले ही शुरू हो जाती है और किसी न किसी रूप में मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा की इस लम्बी प्रक्रिया के प्रारम्भिक वर्षों में माँ ही शिक्षक की भूमिका निभाती है और परिवार ही शिशु की प्राथमिक पाठशाला होती है, बाद में बालक पाठशाला जाता है और पारम्परिक शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा के इस स्तर पर शुरू की भूमिका गोविन्द से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है। अंत में पारम्परिक और व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर लेने के बाद व्यक्ति की परिस्थितियाँ ही शिक्षक की भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार शिक्षा जीवन पर्यन्त चलती रहती है और शिक्षक उसकी उन्नति, प्रगति और उपलब्धियों में निर्णायक भूमिका निभाता है।

शिक्षक या गुरू ही इस शैक्षिक प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। गुरू की महिमा का वर्णन वेदों में, शास्त्रों में, काव्यों में, कहानियों में, कहावतों में सभी स्थानों पर मिलता है। इनमें गुरू को ज्ञानी, आदर्शवादी, संस्कारी, राष्ट्र निर्माता, भविष्य निर्माता और परम संतोषी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गुरू-शिष्य की परम्परा में गुरू कुटिया में रहते थे, सन्यासियों का जीवन व्यतीत करते थे, शिक्षा से भोजन करते थे, न कोई आवश्यकता न कोई आडम्बर, पूरा ध्यान अपने शिष्यों को योग्य बनाने और उनमें दिव्य शक्तियाँ भरने पर केन्द्रित रहता था। शिक्षक को ज्ञान व अनुभव के धारक के रूप में जाना जाता था। वह प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभाता था जो सभी को निस्वार्थ मार्ग दर्शन प्रदान करता था। उसे संस्कृति और परम्पराओं का रक्षक, संग्रहित अनुभवों का वितरक और पुनर्निर्माता तथा सामायिक शिक्षा के विकास का माध्यम माना जाता था। वह अपने छात्रों को न केवल शिक्षित बनाता था बल्कि इन्हें शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी सहयोग करता था। इस प्रकार शिक्षक अपने ज्ञान के द्वारा बालकों का मानसिक विकास करता था और अपने व्यक्तित्व के द्वारा उनका चतुर्मुखी विकास करता था।

समय के साथ-साथ शिक्षा के उद्देश्य भी बदले तथा वर्तमान परिस्थितियों ने जन्म लिया। मानव की आवश्यकतायें बढ़ने लगीं और शिक्षक भी भौतिकवादी हो गया। वह अपने हालात से असंतुष्ट रहने लगा और सम्पन्नता के विकल्प तलाश ने लगा। कुटिया बहुत पीछे छूट गयी, गुरू-शिष्य की परम्परा लुप्त हो गयी और उसका स्थान सम्पूर्ण सुविधओं से युक्त कोठियों तथा शिक्षक-विद्यार्थी

के औपचारिक सम्बन्धों ने ले ली। इसीलिये आज का शिक्षक न तो अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट है, न अपनी कार्य शैली से संतुष्ट है। वह अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक और समायोजनात्मक चिन्ताओं से ग्रस्त है। यही कारण है कि आज शिक्षक के सिद्धान्त एवं व्यवहार में अन्तर आया है, जिसके कारण शिक्षक और छात्र के मध्य अन्तःक्रियाओं में तनाव एवं विघटन की संभावनाएँ बढ़ गयी हैं। शिक्षक भौतिक सुख सुविधओं के लिए वह सब कुछ कर रहा है जो एक आदर्श शिक्षक को नहीं करना चाहिए। इस प्रकार छात्र वर्ग भी भटकाव में जी रहा है। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में निरन्तर ह्रास एवं परिवर्तन का एक प्रमुख कारण शिक्षा का निजीकरण होना है। आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी बाजार की दुकानों की तरह नित्य नये शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं। किसी प्रकार का सरकारी हस्तक्षेप न होने के कारण इन संस्थाओं में प्रबंधतन्त्र द्वारा खुला शोषण एवं मनमानी का राज कायम है।

वास्तव में, इस समाज में न तो कुछ अच्छा है और न ही कुछ बुरा है, बल्कि व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में चलने वाला चिन्तन ही किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना या व्यवहार को अच्छा या बुरा बनाती है। क्योंकि स्ववित्तपोषित संस्थानों में स्ववित्तपोषित विभाग के शिक्षकों में असुरक्षा की भावना पायी जाती है इसीलिये उनका प्रत्यक्षीकरण न तो अपने कार्य के प्रति स्वस्थ होता है और न ही अपने संस्थान तथा प्रबन्धन के प्रति अच्छा होता है। यहाँ तक कि उन्हें अपने छात्रों से भी कोई लगाव नहीं होता। दूसरी ओर छात्रों का प्रत्यक्षीकरण भी अपने शिक्षकों के प्रति सम्मानजनक नहीं होता और प्रबन्धतंत्र भी इन शिक्षकों को तरह-तरह से अपमानित करता रहता है। इसीलिये उनमें असंतोष, असुरक्षा, हीनता और चिंताग्रस्तता पायी जाती है जिसके कारण उनका समायोजन बिगड़ जाता है। इसके विपरीत सहायता प्राप्त संस्थानों में स्ववित्तपोषित विभाग के शिक्षकों में सापेक्षिक रूप से अधिक सुरक्षा पायी जाती है। उनका प्रत्यक्षीकरण भी अपने कार्य, संस्थान और प्रबन्धन के प्रति स्वस्थ होता है। वे अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं इसीलिये गम्भीरता से कार्य करते हैं और छात्रों से सम्मान भी पाते हैं। किन्तु दोनों प्रकार के संस्थानों में पुरूष शिक्षक और महिला शिक्षकों की स्थिति भी समान नहीं होती। पुरूष शिक्षकों में कर्तव्यपरायणता, कार्यसंतोष और चिन्ताग्रस्तता अधिक पायी जाती है। इसलिये उनका समायोजन अपेक्षाकृत खराब होता है। दूसरी ओर महिला शिक्षक स्वभाव से ही अधिक कर्तव्यपरायण, अधिक संतुष्ट और कम चिन्ताग्रस्त होती हैं। इसीलिये उनका समायोजन भी तुलनात्मक रूप से अच्छा होता है। इसी प्रकार स्ववित्तपोषित संस्थानों के स्ववित्तिपोषित विभागों की महिला शिक्षकों और सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों की महिला शिक्षकों में भी सुरक्षा की भावना, कर्तव्यपरायणता, कार्यसंतोष, चिन्ताग्रस्तता और समायोजन के स्तर में भी अंतर पाया जाता है। किन्तु उपरोक्त सभी मान्यताओं, विश्वासों या कल्पनाओं की सत्यता की जांच करना आवश्यक है। इसीलिये **"गैर तकनीकी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के शिक्षकों में कार्यसंतोष एवं प्रतिबल का अध्ययन"** विषय प्रस्तुत अध्ययन के लिये चुना गया है।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः

शोधर्थिनी ने स्ववित्तपोषित डिग्री कालेज में प्रबन्धकीय व्यवस्था के अन्तर्गत नियुक्त शिक्षिकों एवं शिक्षकाओं के कार्यो के विभिन्न रूपों को बहुत ही नजदीक से देखा एवं महसूस किया है, इसलिए शोधार्थिनी को स्ववित्तपोषित उच्च शिक्षा संस्थाओं की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक कार्य पद्धति, शिक्षक व छात्र वर्ग के मध्य सम्बन्ध, शिक्षक व्यवहार, संस्थाप्रमुखों का शिक्षकों के प्रति व्यवहार, शिक्षकों का कार्य-संतोष व कार्य दशाओं आदि की पर्याप्त एवं गहन जानकारी है। एक शिक्षक स्ववित्तपोषित संस्था में नियुक्ति तथा तदुपरान्त किन-किन परिस्थितियों से गुजरता है? उसकी क्या-क्या समस्याएँ हैं? आदि को शोधर्थिनी ने बड़ी निकटता से अनुभव किया है और पाया है स्ववित्तपोषित संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक निरन्तर तनावग्रस्त रहता है तथा उसे अपनी सेवा सम्बन्धी, सुरक्षा एवं अनिश्चितता का भय बना रहता है। छात्र वर्ग के मस्तिष्कमें भी ऐसे शिक्षकों के प्रति कुछ विशेष सम्मान नज़र नहीं आता। इन सब स्थितियोंको देखकर शोधार्थिनी के मन में यह जिज्ञासा विकसित हुई कि स्ववित्तपोषित शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया जाये। अतः प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक मनोवैज्ञानिक प्रयास है।

2.1 शोध समस्या कथनः

"गैर तकनीकी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के शिक्षकों में कार्यसंतोष एवं प्रतिबल का अध्ययन"

2.2 शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

कार्य सन्तोष

कार्य संतोष एक प्रकार का समन्वयया मैचिंग है जो कर्मचारी की अपने कार्य से की गयी अपेक्षाओं, कार्य द्वारा कर्मचारीको लौटाई गयी आर्थिक-अनार्थिक सुविधाओं और कर्मचारी के जीवन मूल्यों के बीच पायी जाती है। यह मैचिंग जितनी ही अच्छी होगी कार्यसंतोष उतना हीअधिक होगा। इसके विपरीत मैचिंग जितनी ही खराब होगी कार्यसंतोष उतना ही कम होगा। फिर भी यह देखा जाता है कि जो कर्मचारी मानसिक रूप से परिपक्व और संतुलित होते हैं, जो संपूर्ण रूप से विकसत होते हैं, जिन्हें सामाजिक आर्थिक सुविधयें मिली होती हैं और जिनकी कार्य परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं, वे संतुष्ट होते हैं।

प्रतिबल

प्रतिबल व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति है जिसमें वह अपने अंदर गंभीर मानसिक भारीपन का अनुभव करता है। इस स्थिति में व्यक्ति निरन्तर एक अपरिहार्य संवेगात्मक खिंचाव का अनुभव करता है। व्यक्ति इस स्थिति से अपने को यथाशीघ्र मुक्त करना चाहता है किन्तु लगातार प्रयत्न करने के बाद भी अपने को मुक्त नहीं करा पाता। उसकी यह असफलता व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक दोनों स्तरों पर दिखायी देती है।

3. शोध अध्ययन के उद्देश्य

- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के कार्यसंतोष का अध्ययन करना।
- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के प्रतिबलका अध्ययन करना।

4. शोध अध्ययन के परिकल्पनाऐं

- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के कार्यसंतोष में सार्थक अंतर पाया जाता है।
- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों एंव महिला शिक्षकों के प्रतिबल में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

5. शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्रीय प्रयोगात्मक अभिकल्प का उपयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या से आशय उत्तर प्रदेश प्रान्त के उत्तर पश्चिम में स्थित जनपद शामली के गैर तकनीकी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों में कार्यरत् सभी पुरूष एवं महिला शिक्षकों से है, जिनमें से सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के 60 पुरुष शिक्षक और 60 महिला शिक्षक चुने गये हैं। इस प्रकार कुल 120 इकाइयाँ चुनी गयी।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न 2 परीक्षणों का उपयोग किया गया है- कार्यसंतोष परीक्षण - डा0 अमर सिंह तथा डा0 टी0आर0 र्शमा एवं प्रतिबल परीक्षण - डा0 अरुण कुमार सिंह, डा0 आशीष कुमार सिंह व डा0 अपर्णा सिंह।

शोध आंकड़ा संग्रहण विधि एवं तकनीकी

आंकड़ा संग्रहण के लिए शोधकर्ताओं ने व्यक्तिगत रूप से न्यादर्श में चयनित जनपद के विभिन्न ब्लाकों तथा नगर क्षेत्र के गैर तकनीकी शिक्षण संस्थनों को रखा गया। शोधकर्ताओं ने संस्थानों के प्राचार्यो की अनुमति लेकर शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं से सम्पर्क किया तथा उन पर मापनी का प्रशासन कर समंक संग्रहित किए।

शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक विभ्रम, टी परीक्षण और सहसम्बन्ध का प्रयोग किया जायेगा।

6. शोध अध्ययन की परिसीमायें :

- प्रस्तुत अध्ययन सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकां तथा महिला शिक्षकों पर किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा के कारण जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संकाय सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की उपेक्षा की गई है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल गैर तकनीकी उच्च शिक्षण संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।

7. आंकड़ों की व्याख्या एवं विष्लेषण :

सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के शिक्षकों के प्राप्तांकों को भी अलग-अलग संगठित किया गया है तथा उनके लिये भी मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात किये गये है। उक्त सभी परिणामों को तालिका सं0-1 द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या-1
सम्पर्ण न्यादर्श की दोनों श्रेणियों का परिणाम

क्र.सं.	श्रेणी	कार्य सन्तोष		प्रतिबल	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
1-	सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षक	70.71	11.50	28.80	12.70
2-	सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षक	73.07	9.90	18.70	11.45

उपरोक्त तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि प्रकार सम्पूर्ण न्यादर्श को मनोवैज्ञानिक विशेषताओं-कार्यसंतोष एवं प्रतिबल का मापन किया गया है। अतः प्रत्येक वर्ग की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की व्याख्या आवश्यक है-

कार्यसंतोष

तालिका सं0-2 में प्रतिचयन की सभी श्रेणियों के कार्यसंतोष के परिणामों को अंकित किया गया है।

तालिका संख्या-2
सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के षिक्षकों में कार्यसंतोष सम्बन्धी परिणाम

क्र.सं.	श्रेणी	कार्य सन्तोष		
		मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
1-	सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षक	70.72	11.54	1.29
2-	सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षक	73.25	9.90	

तालिका संख्या-2 में सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों के परिणामों को अंकित किया गया है, जिनका मध्यमान 70.72 अंक और मानक विचलन 11.54 अंक है। निर्देश पुस्तिका की तालिका सं0-01 में कॉलेज के शिक्षकों का मध्यमान 66.58 अंक दर्शाया गया है और मानक विचलन 19.2 अंक दर्शाया गया है। इस प्रकार सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों में कार्यसंतोष की मात्रा सामान्य शिक्षकों से कहीं अधिक है साथ ही उनके प्राप्तांकों में स्थिरता भी अधिक है। दूसरी ओर सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षकों के परिणामों को तालिका सं0-2 में अंकित किया गया है। इनका मध्यमान 73.25 और मानक विचलन 9.90 अंक है। जोकि सामान्य शिक्षकों के मध्यमान से 6.69 अंक और मानक विचलन 9.29 अंक कम है।

अतः इनके सम्बन्ध में भी यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षकों में भी कार्यसंतोष की मात्रा कॉलेज के सामान्य शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक है और उनके प्राप्तांकों में भी स्थिरता और विश्वसनीयता अधिक है। जब हम सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष तथा महिला शिक्षकों की आपस में तुलना करते हैं तो पाते हैं कि पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षकों में कार्यसंतोष भी तुलनात्मक रूप से अधिक है। किन्तु जब हम दोनों मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये क्रांतिक अनुपात के मापक का प्रयोग करते हैं तो ज्ञात होता है कि मूल्य केवल 1.29 अंक है जोकि सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है क्योंकि यह मूल्य .05 तथा .01 स्तर पर दिये गये मूल्यों से कापफी कम है। अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों और महिला शिक्षकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता। जो भी अंतर दिखाई दे रहे हैं वे काल्पनिक हैं और परीक्षण को दोहराने पर समाप्त हो सकते हैं।

प्रतिबल

तालिका सं0-3 में प्रतिचयन की सभी श्रेणियों के प्रतिबल के परिणामों को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या-3
सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के षिक्षकों में प्रतिबल सम्बन्धी परिणाम

क्र.सं.	श्रेणी	प्रतिबल		
		मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
1-	सहायता प्राप्त संस्थान के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षक	55.15	12.75	1.09

2-	सहायता प्राप्त संस्थान के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षक	52.73	11.50	

तालिका सं0-3 में सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकां के परिणामों को दर्शाया गया है। प्रतिबल के संदर्भ में इनका मध्यमान 55.15 अंक है जोकि तालिका में सबसे अधिक है किन्तु निर्देश पुस्तिका की तालिका सं0-03 में इस मूल्य को सामान्य प्रतिबल के रूप में परिभाषित किया गया है। अतः सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों में प्रतिबल की मात्रा सामान्य स्तर की है तथा निर्देश पुस्तिका की तालिका सं0-01 के अनुसार इनका प्रतिशतांक भी 50 है। अर्थात सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों में प्रतिबल की मात्रा सामान्य जनसंख्या में 50 प्रतिशत व्यक्तियों से अधिक है। इसी प्रकार तालिका सं0-3 में सहायता प्राप्त संस्थानों के महिला शिक्षकों के परिणामों को दर्शाया गया है जिनके प्रतिबल का मध्यमान 52.73 अंक है। निर्देश पुस्तिका की तालिका सं0-03 में सामान्य प्रतिबल का विस्तार 31-79 तक अंकित किया गया है। इस आधार पर सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों की महिला शिक्षकों को भी सामान्य प्रतिबल की श्रेणी में रखा जा सकता है। महिलाओं के प्रतिशतांक के लिये निर्देश पुस्तिका में तालिका सं0-02 निर्धारित की गयी है जिसमें 52.73 अंक के लिये भी प्रतिशतांक 50 दर्शाया गया है।

अतः सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षक भी सामान्य जनसंख्या के 50 प्रतिशत व्यक्तियों से अधिक प्रतिबल रखती हैं। इस प्रकार सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष तथा महिला दोनों ही प्रकार के शिक्षक सामान्य प्रतिबल की श्रेणी में आते हैं और दोनों का ही प्रतिशतांक 50 है। फिर भी दोनों समूहों के मध्यमान और मानक विचलन अलग-अलग हैं। अतः दोनों समूहों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि इनके मध्यमानों में 2.16 अंक का अंतर है और यह अंतर सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुषों के पक्ष में है। अतः उनमें प्रतिबल की मात्रा तुलनात्मक रूप से अधिक पायी जाती है। किन्तु इस निष्कर्ष को मानक विचलनों का समर्थन नहीं मिलता, क्योंकि सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों का मानक विचलन, सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के महिला शिक्षकों से 1.25 अंक अधिक है।

अतः सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों का मध्यमान अधिक होने के बाद भी प्राप्तांकों में स्थिरता और विश्वसनीयता अपेक्षाकृत कम है। इसीलिये मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया गया जिसका मूल्य केवल 1.09 अंक है। किन्तु यह मूल्य सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः हम कह सकते हैं कि सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष तथा महिला शिक्षकों के प्रतिबल में कोई सार्थक भिन्नतायें नहीं पायी जाती जो भी अंतर दिखायी दे रहा है वह काल्पनिक है और परीक्षण के दोहराने पर समाप्त हो सकता है।

8. निष्कर्ष :

अध्ययन के लिये एकत्र किये गये आंकड़ों के परीक्षणों से प्राप्त प्राप्तांकों और उनके गणनात्मक परिणामों के आधार पर कुछ प्रमुख निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं-

- सभी चुने गये समूहों में कार्यसंतोष का स्तर कालेज के सामान्य शिक्षकों की तुलना में अधिक होता है।
- सभी समूहों के कार्यसंतोष के प्राप्तांकों में स्थिरता और विश्वसनीयता की मात्रा सामान्य शिक्षकों से अधिक पायी गयी है।
- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों के पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षकों में कार्यसंतोष की मात्रा अधिक पायी गयी है।
- सभी महिला शिक्षकों में सभी पुरुष शिक्षकों की तुलना में कार्यसंतोष की मात्रा अधिक होती है।
- सहायता प्राप्त संस्थानों के स्ववित्तपोषित विभागों की महिला शिक्षकों और सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक अपने शिक्षण कार्य से अति संतुष्ट पाये गये।
- प्रतिबल के संदर्भ में सभी समूह सामान्य स्तर के हैं तथा सभी समूहों का प्रतिशतांक लगभग 50 है।
- प्रतिबल के संदर्भ में पुरुष शिक्षकों और महिला शिक्षकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Abhinav, Vijaylaxmi (2000) “Marital Adjustment of working Women and Kulkarni & others housewives”, Jr. of Projective Psychological and Mental Health, 2000 p. 153-158
2. Agarwal, M. (1999) A Study of Life Stress of University, Students of Psy. of Allahabad University.
3. Alexandara (2003) Delayed physical maturation of girls and adjust Prokopeakovament problems, Ustav experimentally psychologic SAV. Bratislava. P/o 273-276
4. Arkaff, AB.E. (1974) Adujstment and Mental Health, New York, Mc Graw Hill
5. Atkinson, J.W. (1966) A Theory of Achievement Motivation, New York: John Wiley, 1966

6. Bajpais (1999) Effect of caste belongingness of adjustment of high school girls the progress of education (Pune Vidyarthi & Griha Prakashan Sada Shiv Peth) July 1999 Vol. IXXIII.
7. Bhatnagar, P. etc. (2011) Anxiety Depression and Stress Scale. Agra: National Psychological Corporation.
8. Cox, T. (1978) Stress, London: Macmillan. Ckai, J.B. (1999) The Relationship between depression and school related Adjustment. Jr. of Korean Academy of Family, Medicine, 1999, Sept. 20 (9), 1144-1151
9. Dua, R. (1992) A Study of adjustment familiar role, exceptions and modernization of working and non working women Ph.D. Edu. R.U. Bareilly.
10. Eysenek, H.J. (1975) Encyclopedia of Psychology Vol. I Richard Clay, & Others The Chancer Press Ltd. Bungay Suffolk 1975
11. Fieder, E.R. and (2004) Traits associated with Personality disorders and others Adjustment to military life-Military Medicine; 2004, 169, p. 32-40
12. Freud, S. (1936) Inhibition, symptoms and anxiety. London: Hogarth Press, 1936
13. Garrett, H.E. (1964) 'General Psychology', Indian Reprint, 1964
14. Goode. W.J. & (1952) Method in social international student's edition Hatt, P.K. McGraw Hill Book Company Inc. New York, 1952.
15. Hanna and (2005) "Mental Retardation in Mothers & Siblings". Midlarsky American Jr. of Mental Retardation, 2005
16. Hines, M.T. (2007) Adolescent adjustment to the middle school transition, the intersaction of divorse and gender in review, Res. in Middle level edu. Vol. I, P. 21-35
17. Jai Prakash (1994) A study of sociometric status in relation personality traits and level of adjustment in school children. Indian journal of Psychology, Vol. 69 (3 and) 1994.
18. Jawa, S. (1971) Anxiety and job satisfaction. Indian Journal of Applied Psychology, 1971, 8, 70-71, M.Ed., Delhi University, 1968